Page No. 1-23 / February 2022

मेरी खेती

- खेत खलियान
- पशुपालन - पशुचारा
- सब्जी
- मशीनरी
- फल
- किसान समाचार
- सरकारी नीतियां
- औषधीय खेती

+91 766 8256 275
krishan@merikheti.com
www.merikheti.com

संपादकीय

सरकार किसानों के द्वार

जिस सरकार को पूरे एक साल तक किसान खोज रहे थे वह आज खुदबखुद किसानों के द्वार पर आ पहुंची है। इसके केन्द्र में हैं यूपी चुनाव। यूपी चुनाव इस लिए खास हैं क्योंकि पुरानी कहावत कि दिल्ली की कुर्सी का रास्ता लखनऊ होकर जाता है के अपने माईने हैं। सभी दल किसानों को साधने में लगे हैं। उत्तर प्रदेश में 2.38 करोड़ किसान परिवार हैं। इनकी जनसंख्या करीब 14 करोड़ है। वहीं किसान मतदाता 9.20 करोड़ हैं। चुनावी समर में उनकी आन, बान, शान, मान और सम्मान सब बढ़ जाता है। हर बार हर दल द्वारा किसानों की समृद्धि के दावे होते हैं लेकिन फटेहाल के फटेहाल ही रह जाते हैं।

378 दिन चले किसान आन्दोलन का हश्र ज्यादा अच्छा नहीं रहा। लम्बे इन्जार के बाद सरकार को झुकना पड़ा और किसानों की मांगें माननी पड़ीं। पराली जलाने को लेकर दर्ज हुए मुकदमे वापस हो गए। गन्ना किसानों के लिए अनेक सहूलियतों का एलान कर दिया। गन्ने का भुगतान भी नियमित हो गया। निजी नलकूपों की बिजलीदर आधी कर दी गई। पुराने बिजली बिल, कहीं सरचार्ज मांफ करने की घोषणाएं आम हो गई। बोरोगारों को रोजगार देने का दम भरने वाले किसी भी दल ने युवाओं को पर्याप्त टिकिट नहीं दिए। ज्यादातर युवाओं में राजनीतिक बिरासत वाले ही टिकिट पा सके हैं।

समाजवादी पार्टी ने अपने घोषणापत्र में 300 यूनिट मुफ्त बिजली, किसान आन्दोलन में मरे किसानों के परिवारों को 25 लाख और उनके स्मारक बनाने जैसे वादे किसानों को आकर्षित करने के लिए ही दिए हैं। इसके अलावा भी कई अहम मुद्दो को वह प्रमुखता से उठा रहे हैं। कांग्रेस इनसे भी एक कदम आगे बढ़ गई है। उसने अपने घोषणापत्र में उनकी सरकार बनने पर सभी किसानों का पूरा कर्जा माफ करने का एलान किया है। बिजली बिल आधे करने, छत्तीसगढ़ मॉडल जहां सरकार गोबर खरीदकर किसानों की माली हालत सुधारने का काम कर रही है जैसे वादे किए हैं। आवारा पशुओं से मुक्ति की युक्ति के रूप में इसे परोसा गया है। बसपा भी कमजोर तबके के लोगों को आकर्षित करने के लिए कभी सपा तो कभी अन्य दलों को कोसती नजर आ रही हैं।

किसानों के नाम पर राजनीति करने वाले राष्ट्रीय लोकदल को भी सपा गठबंधन की आक्सीजन मिल गई है। वह किसान सम्मान निधि दोगुनी करने एवं शहीद किसानों के स्मारक बनाने की बात कह रहे हैं। आम आदमी पार्टी भी फ्री बिजली और एमएसपी की गारंटी देने का दम भर रही है। यानी कल तक मैले कुचैले कपड़ों में लिपटे किसान अब सबके लिए भगवान हो गए हैं। सबकी नजर उन्हीं पर है।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बीते दिनों हाथ में गेहूं चावल लेकर संकल्प तक ले डाला कि जिन लोगों ने किसानों को गाडियों से कुचला उन्हें सत्ता से बेदखल करेंगे। इसके जबाव में यूपी के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि यह अखिलेश का महज ड्रामा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अखिलेश को किसानों के बजाय जिन्ना प्रमी तक कह डाला।

मसलन देश की बड़ी आबादी किसानों की है। सभी इसे लुभावने वादों से फुसलाना चाहते हैं। उनके बच्चों की अच्छी शिक्षा और रोजगार की गारंटी का वादा गायब ही दिखता है। देश का भविष्य माने जाने वाले बच्चों के अधिकारों पर किसी दल ने कुछ भी नहीं बोला। यानी बच्चे हों या बड़े फिलहाल दलों को खुद के भविष्य की चिंता है। सरकार बनने के बाद अफसरान लुभावने श्लोगनों के सहारे स्कीम लांच करते हुए पांच साल पूरे करने का काम करा ही देंगे।

दिलीप यादव
मेरी खेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

सर्दी में पाला, शीतलहर व ओलावृष्टि से ऐसे बचाएं गेहूं की फसल

किसान भाइयों खेत में खड़ी फसल जब तक सुरक्षित घर न पहुंच जाये तब तक किसी प्रकार की आने वाले कुदरती आपदा से दिल धड़कता रहता है। किसान भाइयों के लिए खेत में खड़ी फसल ही उनके प्राण के समान होते हैं। इन पर किसी तरह के संकट आने से किसान भाइयों की धड़कनें बढ़ जाती हैं। आजकल सर्दी भी बढ़ रही है। सर्दियों में शीतलहर और पाला भी कुदरती कहर ही है। कुदरती कहर के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है। ओलावृष्टि, सर्दी, शीतलहर, पाला व कम सर्दी आदि की मुसीबतों से किसान भाई किस तरह से बच सकते हैं। आईये जानते हैं कि वे कौन-कौन से उपाय करके किसान भाई अपनी फसल को बचा सकते हैं।

जनवरी में चलती है शीतलहर: -

उत्तरी राज्यों में जनवरी माह में शीतलहर चलती है, जिसके चलते फसलों में पाला लगने की संभावना बढ़ जाती है। शीतलहर और पाले से सभी तरह की फसलों को नुकसान होता है। इसके प्रभाव से पौधों की पत्तियां झुलस जातीं हैं, पौधे में आये फूल गिर जाते हैं। फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं और जो नये दाने बने होते हैं, वे भी सिकुड़ जाते हैं। इससे किसान भाइयों को गेहूं की फसल का उत्पादन घट जाता है और उन्हें बहुत नुकसान होता है। यही वह उचित समय होता है जब किसान भाई फसल को बचा कर अपना उत्पादन बढ़ा सकते हैं क्योंकि जनवरी माह का महीना गेहूं की फसल में फूल और बालियां बनने का का समय होता है

कौन-कौन से नुकसान हो सकते हैं शीतलर व पाला से: -

किसान भाइयों गेहूं की फसल को शीतलहर व पाला से किस प्रकार के नुकसान हो सकते हैं, इस बारे में कृषि विशेषज्ञों ने जो जानकारी दी है, उनमें से होने वाले कुछ प्रमुख नुकसान इस प्रकार से हैं:-

1. यदि खेत सूखा है और फसल कमजोर है तो सर्दियों में शीतलहर से सबसे अधिक नुकसान यह होता है कि पौधे बहुत जल्द ही सूख जाते हैं, पाला से इस प्रकार की फसल सबसे पहले झुलस जाती है।
2. पाला पड़ने से पौधे ठुर्रिया जाते हैं यानी उनकी बढ़वार रुक जाती है। इस तरह से उनका उत्पादन काफी घट जाता है।
3. शीतलहर या पाला से जिस क्षेत्र में तापमान पांच डिग्री सेल्सियश से नीचे जाता है तो वहां पर फसल का विकास रुक जाता है। वहां की फसल में दाने छोटे ही रह जाते हैं।
4. शीतलहर से तापमान 2 डिग्री सेल्सियश से भी कम हो जाता है तो वहां के पौधे पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, पत्तियां टूट सकतीं है। ऐसी दशा में बड़ी बूंदे पड़ने या बहुत हल्की ओलावृष्टि से फसल पूरी तरह से चौपट हो सकती है।

बचाव के लिए रासायनिक व अन्य उपाय करने चाहिये: -

फसलों को शीतलहर से बचाने के लिए किसान भाइयों को रासायनिक एवं अन्य उपाय करने चाहिये। यदि संभव हो तो शीतलहर रोकने के लिए टटिया बनाकर उस दिशा में लगाना चाहिये जिस ओर से शीतलहर आ रही हो। जब शीतलहर को रोकने में कामयाबी मिल जायेगी तो पाला अपने आप में कम हो जायेगा।

कौन-कौन सी सावधानियां बरतें किसान भाई : -

किसान भाइयों को शीतलहर व पाले से अपनी गेहूं की फसल को बचाव के इंतजाम करने चाहिये। इससे किसान का उत्पादन भी बढ़ेगा तो किसान भाइयों को काफी लाभ भी होगा। किसान भाइयों को कौन-कौन सी सावधानियां बरतनी चाहिये, उनमें से कुछ खास इस प्रकार हैं:-

1. कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्दी के मौसम मे पाले से गेहूं की फसल को बचाने के लिए अनेक सावधानियां बरतनी पड़तीं हैं क्योंकि ज्यादा ठंड और पाले से झुलसा रोग की चपेट में फसल आ जाती है। मुलायम पत्ती वाली फसल के लिए पाला खतरनाक होता है। पाले के असर से गेहूं की पत्तियां पीली पड़ने लगतीं हैं। गेहूं की फसल को पाला से बचाने के लिए दिन में हल्की सिंचाई करें। खेत में ज्यादा पानी भरने से नुकसान हो सकता है।
2. कृषि विशेषज्ञों के अनुसार वर्तमान समय में कोहरा और पाला पड़ रहा है। पाले से बचाने के लिए गेहूं की फसल में सिंचाई के साथ दवा का छिड़काव करना होगा। गेहूं की फसल में मैंकोजेब 75 प्रतिशत या कापर आक्सी क्लोराइड 50 प्रतिशत छिड़काव करें।
3. पाले से बचाव के लिए गेहूं की फसल में गंधक यानी डब्ल्यूजीपी सल्फर का छिड़काव करें। डस्ट सल्फर या थायो यूरिया का स्प्रे करें। इससे जहां पाला से बचाव होगा वहीं फसल की पैदावार बढ़ाने में भी सहायक होगा। डस्ट सल्फर के छिड़काव से जमीन व फसल का तापमान घटने से रुक जाता है और साथ ही यह पानी जमने नहीं देता है। किसान भाई डस्ट सल्फर का छिड़काव करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखें कि छिड़काव पूरे पौधे पर होना चाहिये। छिड़काव का असर दो सप्ताह तक बना रहता है। यदि इस अवधि के बाद भी शीतलहर व पाले की संभावना हो तो 15-15 दिन के अन्तराल से यह छिड़काव करते रहें।

4. गेहूं की फसल में पाले से बचाव के लिए गंधक का छिड़काव करने से सिर्फ पाले से ही बचाव नहीं होता है बल्कि उससे पौधों में आयरन की जैविक एवं रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है, जो पौधों में रोग. विरोधी क्षमता बढ़ जाती है और फसल को जल्दी भी पकाने में मदद करती है।

5. पाला के समय किसान भाई शाम के समय खेत की मेड़ पर धुआं करें और पाला लग जाये तो तुरंत यानी अगले दिन सुबह ग्लूकोन डी 10ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। फायदा होगा।

6. कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि सर्दी के मौसम में पानी का जमाव हो जाता है जिससे कोशिकाएं फट जातीं हैं और पौधे की पत्तियां सूख जाती हैं और नतीजा यह होता है कि फसलों को भारी नुकसान हो जाता है। पालों से पौधों के प्रभाव से पौधों की कोशिकाओं में जल संचार प्रभावित हो जाता है और पौधे सूख जाते जाते हैं जिससे उनमें रोग व कीट का प्रकोप बढ़ जाता है। पाले के प्रभाव से फूल नष्ट हो जाते हैं।

7. किसान भाई पाले से बचाव के लिए दीर्घकालीन उपाय के रूप में अपने खेत की पश्चिमी और उत्तरी मेड़ों पर शीतलहर को रोकने वाले वृक्षों को लगायें। इन पौधों में शहतूत, शीशम, बबूल, नीम आदि शा. मिल हैं। इससे शीत लहर रुकेगी तो पाला भी कम लगेगा और फसल को कोई नुकसान नहीं होगा।

ओलावृष्टि से पूर्व बचाव के उपाय करें किसान भाई: -

जैसा कि आजकल मौसम का मिजाज खराब चल रहा है। आने वाले समय में ओलावृष्टि की भी संभावना व्यक्त की जा रही है। ऐसे में गेहूं की फसल को ओलावृष्टि बचाव के उपाय किसान भाइयों को करने चाहिये। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:-

1.कृषि विशेषज्ञों ने अपनी राय देते हुए बताया है कि यदि ओलावृष्टि की संभावना व्यक्त की जा रही हो तो किसान भाइयों को अपने खेतों में हल्की सिंचाई अवश्य करनी चाहिये जिससे फसल का तापमान कम न हो सके।

2. बड़े किसान ओला से फसल को बचाने के लिए हेल नेट का प्रयोग कर सकते हैं जबकि छोटे किसानों के पास सिंचाई ही एकमात्र सहारा है।

3. छोटे किसानों को कृषि विशेषज्ञों ने यह सलाह दी है कि हल्की सिंचाई के बाद 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से नाइट्रोजन का छिड़काव करना चाहिये। इससे पौधे मजबूत हो जाते हैं और वो ओलावृष्टि के बावजूद खड़े रहते हैं। इसके अलावा शीत लहर में भी पौधे गिरते नहीं है।

गेहूं की अच्छी फसल तैयार करने के लिए जरूरी खाद के प्रकार

गेहूं की खेती पूरे विश्व में की जाती है। पुरे विश्व की धरती के एक तिहाई हिस्से पर गेहूं की खेती की जाती है। धान की खेती केवल एशिया में की जाती है जबकि गेहूं विश्व के सभी देशों में उगाया जाता है। इसलिये गेहूं की खेती का बहुत अधिक महत्व है और किसान भाइयों के लिए गेहूं की खेती कृषि उपज के प्राण के समान है। इसलिये प्रत्येक किसान गेहूं की अच्छी उपज लेना चाहता है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक तरीके से खेती की जाती है। इसलिये किसान भाइयों को चाहिये कि वह गेहूं की खेती उन्नत एवं वैज्ञानिक तरीके से करेंगे तो उन्हें अपने खेतों में अच्छी पैदावार मिल सकती है।

क्यों है अच्छी फसल की जरूरत: -

किसान भाइयों एक बात यह भी सत्य है कि जमीन का दायरा सिक. ुड़ता जा रहा है और आबादी बढ़ती जा रही है। मानव का मुख्य भोजन गेहूं पर ही आधारित है। इसलिये गेहूं की मांग बढ़ना आवश्यक है। इस मांग को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक पैदावार करना होगा। जहां लोगों की जरूरतें पूरी होंगी और वहीं किसान भाइयों की आमदनी भी बढ़ेगी। किसान भाइयों गेहूं की खेती बहुत अधिक मेहनत मांगती है। जहां खेत को तैयार करने के लिए अधिक जुताई, पलेवा, निराई गुड़ाई, सिंचाई के साथ खाद एवं उर्वरक का भी प्रबंधन समय-समय पर करना होता है। आइये देखते हैं कि गेहूं की खेती में किन-किन खादों व उर्वरकों का प्रयोग करके अधिक से अधिक पैदावार ली जा सकती है।

अधिक उत्पादन का मूलमंत्र: -

गेहूं की खेती की खास बात यह होती है कि इसमें बुआई से लेकर आखिरी सिंचाई तक उर्वरकों और पेस्टिसाइट व फर्टिसाइड का इस्तेमाल किया जाता है। तभी आपको अधिक उत्पादन मिल सकता है।

बुआई के समय करें ये उपायः -

गेहूं की अच्छी फसल लेने के लिए किसान भाइयों को सबसे पहले तो अपनी भूमि का परीक्षण कराना चाहिये, मृदा परीक्षण या सॉइल टेस्टिंग भी कहा जाता है। परीक्षण के उपरांत कृषि विशेषज्ञों से राय लेकर खेत तैयार करने चाहिये और उनके द्वारा बताई गई विधि से ही खेती करेंगे तो आपको अधिक से अधिक पैदावार मिलेगी। क्योंकि फसल की पैदावार बहुत कुछ खाद एवं उर्वरक की मात्रा पर निर्भर करती है। गेहूं की खेती में हरी खाद, जैविक खाद एवं रासायनिक खाद के अलावा फर्टिसाइड और पेस्टीसाइड का भी प्रयोग करना होता है। कौन सी खाद कब इस्तेमाल की जाती है, आइये जानते हैं:-

1. गेहूं की फसल के लिए बुआई से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार किया जाता है। इसके लिए सबसे पहले 35 से 40 क्विंटल गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति हेक्टेयर खेत में डालना चाहिये। इसके साथ ही 50 किलोग्राम नीम की खली और 50किलो अरंडी की खली को भी मिला लेना चाहिये। पहले इन सभी खादों के मिश्रण को खेत में बिखेर दें और उसके बाद खेत की जमकर जुताई करनी चाहिये।
2. किसान भाई गेहूं की अच्छी फसल के लिए अगैती फसल में बुआई के समय 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश का इस्तेमाल करना चाहिये। गेहूं की पछैती फसल के लिए बुआई के समय 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस, 40 किलोग्राम पोटाश गोबर की खाद, नीम व अरंडी की खली के बाद डालना चाहिये।
3. इसमें नाइट्रोजन की आधी मात्रा को बचा कर रख लेना चाहिये जो बाद में पहली व दूसरी सिंचाई के समय डालना चाहिये।

पहली सिंचाई के समयः -

बुआई के बाद पहली सिंचाई लगभग 20 से 25 दिन पर की जाती है। उस समय किसान भाइयों को गेहूं की फसल के लिए 40 से 45 किलोग्राम यूरिया, 33 प्रतिशत वाला जिंक 5 किलो, या 21 प्रतिशत वाला जिंक 10 किलो, सल्फर 3 किलो का मिश्रण डालना चाहिये। इसके अलावा नैनोजिक एक्सट्रूड जैसे जायद का भी प्रयोग करना चाहिये।

दूसरी सिंचाई के समयः -

गेहूं की खेती में दूसरी सिंचाई बुआई के 40 से 50 दिन बाद की जानी चाहिये। उस समय भी आपको 40 से 45 किलोग्राम यूरिया डालनी होगी। इसके साथ थायनाफेनाइट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 500 ग्राम प्रति एकड़, मारबीन डाजिम 12 प्रतिशत, मैनकोजेब 63 प्रतिशत डब्ल्यूपी 500 ग्राम प्रति एकड़ से मिलाकर डालनी चाहिये।

उर्वरकों का इस्तेमाल का फैसला ऐसे करें: -

मुख्यत: गेहूं की फसल में दो बार सिंचाई के बाद ही उर्वरकों का मिश्रण डालने का प्रावधान है लेकिन उसके बाद किसान भाइयों को अपने खेत व फसल की निगरानी करनी चाहिये। इसके अलावा भूमि परीक्षण के बाद कृषि विशेषज्ञों की राय के अनुसार उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिये। यदि भूमि परीक्षण नहीं कराया है तो आपको अपने खेत की निगरानी अपने स्तर से करनी चाहिये और स्वयं के अनुभव के आधार पर या अनुभवी किसानों से राय लेकर फसल की जरूरत के हिसाब से उर्वरक, फर्टिसाइड व पेस्टीसाइड का इस्तेमाल करना चाहिये।

हल्की फसल हो तो क्या करें: -

विशेषज्ञों के अनुसार दूसरी सिंचाई के बाद देखें कि आपकी फसल हल्की हो तो आप अपने खेतों में माइक्रोर हाइजल दो किलो प्रति एकड़ के हिसाब से डालें। जिन किसान भाइयों ने बुआई के समय एनपीके का इस्तेमाल किया हो तो उन्हें अलग से पोटाश डालने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि एनपीके में 12 प्रतिशत नाइट्रोजन और 32 प्रतिशत फास्फोरस होता है और 16प्रतिशत पोटाश होता है।

डीएपी का इस्तेमाल करने वाले क्या करें: -

जिन किसान भाइयों ने बुआई के समय डीएपी खाद का इस्तेमाल किया हो तो उन्हें पहली सिंचाई के बाद ही 15 से 20 किलो म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड़ के हिसाब से डालना चाहिये। क्योंकि डीएपी में 18 प्रतिशत नाइट्रोजन होता है और 46 प्रतिशत फास्फोरस होता है और पोटाश बिलकुल नहीं होता है।

प्रत्येक सिंचाई के बाद खेत को परखें: -

गेहूं की फसल में 5-6 बार सिंचाई करने का प्रावधान है। किसान भाइयों को चाहिये कि वो कुदरती बरसात को देख कर और खेत की नमी की अवस्था को देखकर ही सिंचाई का फैसला करें। यदि प्रति सिंचाई के बाद यूरिया की खाद डाली जाये तो आपकी फसल में रिक. र्ड पैदावार हो सकती है। यूरिया के साथ फसल की जरूरत के हिसाब से फर्टिसाइड और पेस्टीसाइड का भी इस्तेमाल करना चाहिये। पहली दो सिंचाई के बाद तीसरी सिंचाई 60 से 70 दिन बाद की जाती है। चौथी सिंचाई 80 से 90 दिन बाद उस समय की जाती है जब पौधों में फूल आने को होते हैं। पांचवीं सिंचाई 100 से 120 दिन बाद करनी चाहिये।

खाद सिंचाई से पहले या बाद में डाली जाए?: -

1. किसान भाइयों के समक्ष यह गंभीर समस्या है कि गेहूं की फसल में खाद कब डालनी चाहिये? हालांकि खाद डालने का प्रावधान सिंचा. ई के बाद ही का है लेकिन कुछ किसान भाइयों को यह शिकायत होती है कि सिंचाई के बाद खेत की मिट्टी दलदली हो जाती है, जहां खेत में घुसने में पैर धंसते हैं और उससे पौधों की जड़ों को नुकसान पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में किसान भाइयों को परिस्थिति देख. कर स्वयं फैसला लेना होगा।
2. यदि भूमि अधिक दलदली है और सिंचाई के बाद पैर धंस रहे हैं तो आपको खेत के पानी को सूखने का इंतजार करना चाहिये लेकिन पर्याप्त नमी होनी चाहिये तभी खाद डालें। इसके लिए आप सिंचाई से अधिक से अधिक दो दिन के बाद खाद अवश्य डाल देनी चाहिये। यदि यह भी संभव न हो पाये तो इस तरह की भूमि में सिंचाई से 24 घंटे पहले खाद डालनी चाहिये लेकिन ध्यान रहे कि 24 घंटे में सिंचाई अवश्य ही हो जानी चाहिये। तभी खाद आपको लाभ देगी अन्यथा नहीं।
3. यदि आपके खेत की भूमि बलुई या रेतीली है, जहां पानी तत्काल सूख जाता है और आप खेत में आसानी से जा सकते हैं तो आपको सिंचाई के तत्काल बाद ही खाद डालनी चाहिये। ऐसे खेतों में अधिक

अधिक पैदावार के लिए करें मृदा सुधार

भारत में कृषि प्रगति का श्रेय किसान एवं वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत के अलावा उन्नत किस्म उर्वरकों एवं सिंचित क्षेत्र को जाता है. इसमें अकेले उर्वरकों का खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि के लिए 50 परसेंट योगदान माना जाता है. उल्लेखनीय है कि फसलों द्वारा उपयोग की जाने वाली पोषक तत्वों की मात्रा और आपूर्ति में बहुत बड़ा अंतर है. फसलें कम उर्वरक लेती हैं, किसान ज्यादा डालते हैं जिसका दुष्प्रभाव जमीन की उर्वरा शक्ति पर लगातार पड़ रहा है. देश के किसान उर्वरकों के उपयोग में न तो वैज्ञानिकों की संस्तुति का ध्यान रखते हैं ना अपने ज्ञान विशेष का। असंतुलित उर्वरकों के उपयोग से उन्नत व पौधों को हर तत्व की पूरी मात्रा मिल पाती है और ना ही उत्पादन ठीक होता है। इसके अलावा किसानों की लागत और बढ़ जाती है।

जरूरत इस बात की है कि किसान संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें ताकि उत्पादन अच्छा और गुणवत्ता युक्त हो एवं मृदा स्वास्थ्य ठीक रहे।

उपज में इजाफा ना होने के कारण: -

मृदा में मौजूद पोषक तत्वों की सही जानकारी का अभाव रहता है।
किस फसल के लिए कौन सा पोषक तत्व जरूरी है इसका ज्ञान ना होना।
मुख्य एवं क्षमा सूक्ष्म पोषक तत्वों के विषय में जानकारी ना होना।
उर्वरकों के उपयोग की विधि एवं समय कर सही निर्धारण न होना।
सिंचाई जल का प्रबंधन ठीक ना होना।
फसलों में कीट एवं खरपतवार प्रबंधन समय से ना होना।
लगातार एक ही फसल चक्र अपनाना।
कार्बनिक खाद का उपयोग न करने से रासायनिक खादों से भी उपज में ठीक वृद्धि ना होना।

फसलेंध्उर्वरक तत्वों की मात्रा किलोग्राम प्रति हेक्टेयर: -

	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
धान	120	60	40
गेहूं	120	60	40
मक्का	120	60	40
बाजरा	80	40	40
सरसों	80	40	80
अरहर	25	60	x
चना	25	50	x
मूग	25	50	x
उर्द	25	50	x

वैज्ञानिक सुझाव भी कारगर नहीं: -

इस विधि का मुख्य जोश लिया है की इसमें मिट्टी की उर्वरा शक्ति का ध्यान नहीं रखा जाता। खेतों की उर्वरा शक्ति अलग-अलग होती है लेकिन बिना जांच के हमें एक समान ही खाद लगाना पड़ता है। किसी खेत में किसी एक तत्व की मात्रा पहले से ही मौजूद होती है लेकिन बगैर जांच के हम उसे और डाल देते हैं। उपज पर इसका अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता।

पोषक तत्वों की कमी के लक्षर्ण:

1.नाइट्रोजन- पुरानी पत्तियों का रंग पीला पड़ जाता है। अधिक कमी होने पर पत्तियां बोरी होकर सूख जाती हैं।

2.फास्फोरस-पत्तियों एवं तनाव पर लाल लिया बैंगनी रंग आ जाता है। जड़ों के फैलाव में कमी हो जाती है।

3.पोटेशियम- पुरानी पत्तियों के किनारे पीले पड़ जाते हैं। पत्तियां बाद में भंवरी झुलसी हुई लगने लगती हैं।

4.सल्फर- नई पत्तियों का रंग हल्का हरा एवं पीला पड़ने लगता है दलहनी फसलों में गांठें कब बनती हैं।

5.कैल्शियम-नई पत्तियां पीली अथवा गहरी हो जाती हैं। पत्तियों का आकार सिकुड़ जाता है।

6.मैग्नीशियम पुरानी पत्तियों की नसें हरी रहती हैं लेकिन उनके बीच का स्थान पीला पड़ जाता है। पत्तियां छोटी और सख्त हो जाते हैं।

7.जिंक-पुरानी पत्तियों पर हल्के पीले रंग के धब्बे देखने लगते हैं। शिरा के दोनों ओर रंगहीन पट्टी जिंक की कमी के लक्षण है।

8.आयरन-नई पत्तियों की शिराओं के बीच का भाग पीला हो जाता है। अधिक कमी पर पत्तियां हल्की सफेद हो जाती हैं।

9.कॉपर-पत्तियों के शिराओं की चोटी-छोटी एवं मुड़ी हुई हल्की हरी पीली हो जाती है।

10.मैग्नीज-की कमी होने पर नई पत्तियों की शिराएं भूरे रंग की तथा पत्तियां पीली से भूरे रंग में बदल जाती हैं।

11.बोरान-नई पत्तियां गुच्छों का रूप ले लेती हैं। डंठल, तना एवं फल फटने लगते हैं।

12.मालिब्डेनम-पत्तियों के किनारे झुलस या मुड जाते हैं या कटोरी का आकार ले सकते हैं।

क्या है बायो फर्टिलाइजर: -

बायो फर्टिलाइजर जमीन में मौजूद पदे अतिरिक्त खादों को घुलनशील बनाकर पौधों को पहुंचाने में मददगार होता है।

नत्रजन तत्व की पूर्ति के लिए: -

राइजोबियम कल्चर-इसका उपयोग दलहनी फसलों के लिए किया जाता है। 1 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 200 ग्राम के 3 पैकेट राइजो. बियम लेकर बीज को उपचारित करके बुवाई करें। एजेक्वेक्टर एवं एजोस्पाइरिलम कल्चर-बिना दाल वाली सभी फसलों के लिए निम्नानुसार प्रयोग करें। रोपाई वाली फसलों के लिए दो पैकेट कल्चर को 10 लीटर पानी के घोल में पौधे की जड़ों को 15 मिनट तक ठोकर रखने के बाद रोपाई करें।

फास्फोरस तत्व की पूर्ति के लिए: -

पीएसबी कल्चर-रासायनिक उर्वरकों द्वारा दिए गए फास्फोरस का बहुत बड़ा भाग जमीन में घुलनशील होकर फसलों को नहीं मिल पाता। पीएसबी कल्चर फास्फोरस को घुलनशील बनाकर फसलों को उपलब्ध कराता है। बीजोपचार उपरोक्तानुसार करें या 2 किलो कल्चर को 100 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर खेत में मिला दे।

वैम कल्चर-यह कल्चर फास्फोरस के साथ-साथ दूसरे सभी तत्वों की उपलब्धता बढ़ा देता है। उपरोक्त अनुसार बीज उपचार करें।

गंभीर रोगों की दवा हैं जंगली पौधे

पशुओं में दुग्ध बढ़ाने और नीरोग रखने में काम आते हैं ये पौधे खरपतवार समझकर किसान ब्रज में खत्म कर रहे हैं इन जंगली बूटियों को। ब्रज अंचल हो या अन्य क्षेत्रीय वनौषधियां यहां खत्म होती जा रही हैं। पशुओं के रोग हों या मानव स्वास्थ्य सभी से इनका गहरा नाता रहा है। खरपतवार समझकर खत्म की जा रहीं यह सभी औषधियां बहुत उपयोगी हैं। इन पर हर अनुसंधान संस्थान में काम चल रहा है। यहां जीएलए विश्वविद्यालय में सेवानिवृत्त डीएचओ बीएल पचौरी एक हर्बल वाटिका बनाकर इस पर काम कर रहे हैं। आइए जानें कौन-सी हैं यह औषधियां और कितनी उपयोगी हैं।

फरास का पेड़ ब्रज का मुख्य वृक्ष रहा है। वर्तमान में यह विलुप्त होने के कगार पर है। इसे गर्मी का कुचालक माना जाता है। जिस खेत की मेंढ़ पर यह पौधा खड़ा हो वहां फसल को पाला नहीं मार सकता। गर्मी का प्रभाव इसके 50 मीटर से ज्यादा दूरी तक नहीं हो सकता। यह वृक्ष महाभारत कालीन है। कहा जाता है कि इस वृक्ष पर आकाशीय बिजली नहीं गिरती। इसीलिए बरसात के दिनों में जंगली जीव इसके नीचे शरण लेते हैं। खारे पानी में मौजूद तत्व कार्बन डाई एवं मोनो आक्साइड आदि को खत्म करता है। खारे पानी में उत्पन्न होने वाली गैस को खत्म करता था। इसकी पत्ती खिलाने से जानवरों का दूध बढ़ता है।

झरबेरी: -

झरबेरी जंगलों में लगातार घट रही है। राजस्थान में आज भी इसे पशुओं के चारे में प्रयोग में लाया जाता है। इससे दूध की पौष्टिकता के साथ घी में सुगंध बढ़ती है। इसके साथ यह पशुओं को कई बीमारियों से दूर रखता है।

बरना: -

बरना का पेड़ ब्रज में बहुतायत में हुआ करता था। इसे वरुण देवता का द्योतक माना जाता है।इस वृक्ष से सूखा पड़ने की सूचना तीन माह पहले ही मिल जाती थी। यह गर्मी में अच्छा फल फूल रहा हो तो समझ जाता था, इस बार बरसात अच्छी होंगी। अन्यथा सूखा पड़ेगा। गलाघोंटू के लिए इसकी लकड़ी को पशुओं के गले में बांधा जाता है। इसकी छाल का काढ़ा आज भी आदिवासी अपने पशुओं को रोग संक्रमण से बचाने के लिए पिलाते हैं।

कदंब:-

कदंब के पास गाय बांधने से पशु में दूध बढ़ता और प्रजनन क्षमता में सुधार होता है।इसीलिए भगवान कृष्ण ने सारी लीलाएं इसके पास कीं। इसके साथ ही इससे गैस्ट्रिक ट्रबल खत्म होती है। विषाणु एवं जीवाणुनाशी है।

करील:-

करील को हमने मिटा दिया है। दिल के रोगों, ब्लड प्रैसर का समाधान इस वृक्ष से होता है। गर्मी से बचने के लिए काम आता है। मिर्गी रोग के लिए इसकी कोपल व फूल की सब्जी बनाकर खाई जाती थी। इसके फल टैंटी का अचार आज भी चाव से खाया जाता है।

सहजन:-

सहजन का वृक्ष हमारी जमीन को भी ठीक करता है।गठिया से जुड़े रोगों को दूर करता है। इसकी छाल व जड़ काम में आती है। गंभीर गैस्ट्रिक रोगियों को सहजन का मुरब्बा खाने की सलाह वैद्य आज भी देते हैं।

गोंदी ब्रज: -

गोंदी ब्रज की मुख्य वनौषधि थी। इसे सरस्वतीजी का द्योतक माना जाता था। गले के रोगों के लिए इसकी पत्ती प्रयोग में लाई जाती थी। गले के छाले या कष्ट इसकी पत्तियों से खत्म न हों तो समझ जाता था कि कोई गंभीर रोग होने वाला है।

पीलू: -

पीलू ब्रज का प्रमुख वृक्ष रहा है। राधा- कृष्ण की लीलाओं में भी इसका जिक्र आता है। यहां इसे खदार के नाम से भी जाना जाता है। इसकी जड़ अरब देश में मुस्लिम, बहुतायत में प्रयोग करते हैं। यहां भी लोग एक दशक पूर्व तक इसकी टहनियों को दातुन के रूप में प्रयोग करते थे। यह मुख के रोगों के लिए वरदान है। दांतों के रोग पायरिया आदि को दूर करने के गुण इसमें विद्यमान हैं।

पसैंदू 'तमाल': -

पसैंदू तमाल वृक्ष खुरपका मुंहपका में इसके पके फलों को घाव पर बांधते थे। फलों को पानी में उबालकर संक्रमित स्थान को धोते थे। इसके नीचे बच्चों को नहलाने से त्वचा रोग दूर होते हैं। गुजरात में भी यह पाया जाता है। ज्यादा पानी वाले क्षेत्रों में पैरों की उंगलियां गलने के रोग दूर करने में इसका प्रयोग होता है। इसके बीजों में नाइट्रोजन ज्यादा होती है। इसीलिए किसान इसके नीचे की मिट्टी खेतों में डालते थे। इसे श्याम तमाल के नाम से भी जाना जाता है। इंडोनेशिया में इसके फल को आम की तरह प्रयोग करते हैं।

मेरेला 'वन मैथी':-

मेरेला 'वन मैथी' जानवरों का दूध बढ़ाती है। मरुआ की सुगंध अच्छी होती है। कीटनाशक गुण होने के कारण बच्चों के पेट में कृमि होने पर गुदा मुख पर लगाया जाता है। इसका रायता पीने से गैस्ट्रिक ट्रबल खत्म होती है। इसके नीचे सर्प नहीं आता है। यदि आ भी जाए तो वह इस पौधे के दायरे में आने पर निष्क्रिय हो जाता है। इसका प्रयोग मिर्गी रोग में भी किया जाता है।

ऊंट कटेरा: -

ऊंट कटेरा जंगली खरपतवार है। यह जानवरों के दूध बढ़ाने में काम आता है। गर्भाधान की क्रिया को ठीक करता है। हरे चारे के रूप में इसके सेवन से पशु दूसरे ब्यांत में दूध अच्छा देता है। ग्लायडिया विदेशी पुष्प है। यह गर्मियों में भी यहां अच्छा होता है। ब्रज में चूंकि खारी पानी की समस्या है। इसलिए इसकी खेती खारी पानी वाले इलाकों में बहुत अच्छी हो सकती है।

चंद्रसूर: -

चंद्रसूर बहुत पुराना गठिया रोकने एवं महिला व पशुओं में दूध कम उतरने की समस्या को कम करने के काम में आता है। मान्यता है कि इसके पत्ते पर बच्चों को बैठकर खिलाने से उनमें वजन बढ़ता है। यह क्षारीय भूमि में होता है। पहले यह मेंथी के साथ होता था।

कलिहारी: -

कलिहारी की जड़ छह फीट नीचे तक जाती है। इसमें क्रोमोजोम बहुत होते हैं। पहले फसलों का उत्पादन बढ़ाने के काम आता था। प्रसव से पहले बच्चा आसानी से नहीं होता तो सिर से पैर तक इसका लेप किया जाता था। क्रोमोजोम की संख्या के चलते पहले ब्रीडिंग में भी इसका उपयोग करते थे। अब वैज्ञानिकों के अन्य आधुनिक संसाधन विकसित कर लिए हैं तो इसकी उपयोगिता खत्म हो गई है।

लटजीरा: -

इसे ब्रज में ओंगा के नाम से जाना जाता है। यह एण्टी एलर्जिक, एण्टी सेप्टिक एवं एण्टी वायरल गुणों वाला होता है। इसको चारे के रूप में खिलाने से पशुओं की आधी बीमारी खत्म हो जाती हैं। हड्डी टूटने पर इसके पत्तां को घी के साथ छौंक करके पशुओं को खिलाया जाता था। इसकी जड़ बहुत उपयोगी है। लोग इसकी दातुन भी करते थे। गर्भाशय के रोगों में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके चावल खाने से भूख नहीं लगती।

दूब घास: -

दूब घास को हम सब भूल रहे हैं। यह नीली, हरी, गांदर, और सफेद चार तरह की होती है। यह एण्टी वायरल, एण्टी बैक्टीरयल व एण्टी सेप्टिक होती है। इसके रस से बच्चों की नकसीर व महिलाओं का प्रदर की बीमारी दूर होती है। कॉलेस्ट्राल को कंट्रोल करती है। गांवों में चेचक मोतीझला होने पर नीम के साथ घर में या मुख्य द्वार पर इसे लगाया जाता है। जरूरत इस बात की है कि किसान इन वनौषधियों के महत्व को समझें और इनका उपयोग करें।

अच्छे दूध के लिए जरूरी उन्नत चारा किस्में

हरा चारा साल भर दुधारू पशुओं को मिलना डेयरी कारोबार के लिए बेहद जरूरी है। इससे पशुओं को विटामिन्स आदि की जरूरत हर समय पूरी होती रहती है। हरे चारे की अनेक किस्में मौजूद हैं लेकिन किसान केवल ज्वार और बरसीम जैसी फसलों पर ही निर्भर रहता है। चारे वाली उन्नत किस्मों का चयन करके उन्हें साल भर हरे चारे का जुगाड़ रखना चाहिए।

उन्नत किस्में:-

1. ज्वार:- पी. सी.-6, 9, 23, एम.पी.चरी, पुसा चरी, हरियाणा चरी
2. मक्का:- गंगा सफेद 2, 3,5, जवाहर, अम्बर, किसान, सोना, मंजरी, मोती
3. बाजरा:- जाइन्ट हाईब्रिड, के-674, 677, एल-72, 74, टी-55, डी-1941, 2291
4. जई:- एच.एफ.ओ.-14, ओ.एस.-6 एवं 7, वी.पी.ओ.-94
5. लोबिया:- एस-450,457,रष्यिनजाइन्ट,यू.पी.सी.-287, 286,एन.पी., एच.एस.पी.-42-1,सी.ओं-1,14
6. ग्वार:- दुर्गापुरा सफेद, आई.जी.एफ.आर.आई.-212
7. बरसीम:- मैस्कावी, बरदान, बुन्देला, यू.पी.
8. रिजका:- टाईप-8,9, आनंद-द्वितीय, आई.जी.एफ.आर.आई. -एस-244,54, एल.एल.सी.-5 बी.-103
9. हाइब्रिड नेपियर:- पूसा जाइन्ट नेपियर, एन.बी.-21, ई.बी.-4, गजराज, कोयमबटूर
10. सुडान घास:- एस.एस-59-3, जी-287, पाईपर, जै-69
11. दीनानाथ घास:- टाईप-3, 10,15 आई.जी.एफ.आर.आई.-एस 3808, जी-73-1, टी-12
12. अंजन घास:- पूसा जाइन्ट अंजन, आई.जी.एफ.आर.आई.-एस 3108, 3133, सी-357, 358
13. सरसों- जापानी रेप, आ एम-98, 100, लाही-100, चाईनीज कैबेज एफ 2-902, 916

चारा बोने व उगाने की तकनीकी: -

दूसरी फसलों की तरह चारे की फसल के लिये अच्छी निकासी वाली उपजाऊ दोमट से लेकर रेतीली परन्तु समतल भूमि अच्छी रहती है। सबसे अधिक मुख्य रूप से चार चीजें पानी, हवा, सूर्य का प्रकाश व अच्छी उपजाऊ भूमि सफल चारा उत्पादन के लिए जरूरी है। पहली तीन जलवायु से सम्बन्ध रखती है जो कि लाभकारी उत्पादन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। सफल व असफल उत्पादन मौसम की अनुकूल व प्रतिकूल दशाओं पर निर्भर करता है। खरीफ में 25 से 350 सेंटीग्रेड तापक्रम फसलों के लिए उपयुक्त माना जाता है। परन्तु क्षेत्र की जलवायु के अनुसार चारे की किस्मों का बोना ही उचित है। मुख्य चारे की फसलें मुख्यतः लाईन में ड्रील, पोरा, केरा विधि से बोई जाती है। परन्तु छोटे आकार के बीज वाली फसलें जैसे बरसीम, रिजका, सरसों, बाजरा आदि बराबर मात्रा में मिट्टी आदि मिलाकर छिट्टा विधि से भी बोते हैं। दूसरी विधि है जड़ों व तनों की कटाई करके जैसे हाथी घास (रोपण समय मार्च से जून तक) 50 से.मी. लम्बा तना लेकर जिसमें 2-3 कली हो आधा भाग जमीन में तथा आधा भाग भूमि के ऊपर रखकर लाईन में गाढ़ कर बोते हैं।

खेत में 30 से 40 टन गोबर की खाद (कम्पोस्ट) प्रति हैक्टेयर वर्ष में एक बार डाले। सीड ड्रिल का प्रयोग करके मक्का, ज्वार, बाजरा, ग्वार आदि फसलें बोये। एक दाल व दो दाल वाली चारे की फसलों को मिश्रण में बोये जैसे मक्का, लोबिया, ग्वार, बरसीम जई सरसों, बरसीम, लूर्सन ताकि अधिक पैदावार अच्छा पौश्टिक चारों के साथ भूमि की उपजाऊ शक्ति भी बनी रहे। सिंचाई हल्की तथा अन्तिम सिंचा. ई कटाई से गर्मियों में 5-6 दिन पूर्व कर दें ताकि बची नमी पर अगली फसल बोई जा सके। कई कटाई वाली फसलें चक्र में अवष्य रखें जैसे बरसीम, रिजका, मीठा सुडान, हाथी-घास, बाजरा, चरी आदि। परन्तु इनकी कटाई भूमि सतह से 4-5 से.मी. ऊपर से करें ताकि अगली कटाई में शीघ्र फुटवार वा बढ़ोतरी हो। यदि हाथी घास मिश्रण में बोया हो तो इसकी प्रत्येक कटाई विशेषकर गर्मियों में 3 सप्ताह के क्रम में कर लें ताकि दूसरी मिश्रित फसल रिजके आदि को प्रकाश संष्लेशण के लिए पर्याप्त सूर्य की रोषनी मिल सके। यदि बरसीम बोयें तो पहली कटाई में अधिक पैदावार लेने के लिए चाइनीज कैबेज अथवा सरसों अवश्य बोयें। पानी की भरी बाल्टी में बीज डालकर चिकोरी खरपतवार को बरसीम से पहले ही अलग कर दें। कटाई लगातार करते रहे देरी से करने पर विशेषकर मार्च में चने का कैटरपिलर बरस. ीम में आ जाता है। यदि इन्डोसल्फान आदि छिड़काव करना पड़े तो बरसीम को इसके छिड़काव से 15 दिन पूर्व ही काट कर खिला दें। वैसे पेस्टीसाईड अगर न छिड़के तो ही अच्छा रहेगा और बरसीम को तुरन्त काटकर खिला देना चाहिए। अधिक चारा उत्पादन देने वाली प्रमाणिक बीजों को ही बोना चाहिए तथा सन्तुलित उर्वरक एन. पी. के. का प्रयोग करना चाहिए। मानसून घासों की कटाई पर्याप्त पौश्टिकता बने रहने पर करे या हे बनाकर संरक्षित कर लें। मुख्यतः पशुओं को हरा चारा 4 महीने पर्याप्त व 4 महीने आधा सूखा हरा ही पर्याप्त होता हैं। सारे वर्ष हरा चारा खिलाने के लिए साईलेज या हे बनाने का प्रावधान भी रखें।

शिमला मिर्च की खेती कब और कैसे करें

शिमला मिर्च की खेती किसानों के लिए अच्छा वरदान साबित हो सकती है. जैसा की आजकल सामान्य खेती से ज्यादा लोग सब्जियों की खेती पर ध्यान देने लगे हैं. जिससे उनकी आय भी बढ़ने लगी है य और ऐसी सब्जियों को नगदी फसल बोला जाता है. इसमें विटा. मिन। और ब पाया जाता है. इसकी सब्जी बनाई जाती है तथा जो लोग अपनी सेहत को लेकर ज्यादा जागरूक होतें हैं उन्हें इसकी सब्जी या सलाद के रूप में खाने की सलाह दी जाती है. इसको ग्रीन पेपर, स्वीट पेपर, बेल पेपर आदि विभिन्न तरह के नामों से भी जाना जाता है. इसके फल को मिर्च भले ही बोला जाता है लेकिन ये खाने में उतनी तीखी नहीं होती है. इसका फल गूदेदार और कम चरपरा होता है. इसका आकार भी अलग ही तरह का होता है. इसकी फसल के कई रंग होते हैं. शिमला मिर्च की खेती से किसान 2 से 4 महीने में ही अच्छी आमदनी ले सकता है. बशर्ते उसको इसकी खेती की बारीकियां पता हों.

भूमि का चयन: -

शिमला मिर्च की खेती के लिए भूमि का चयन करते समय ध्यान रखना चाहिए की जमीन में पानी निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए. इससे पानी भरने पर हमारी फसल खराब होने की संभावना नहीं रहती है. किसी नीची या गाढ़ जमीन में इसकी खेती नहीं करें. नहीं तो फायदे की जगह नुकसान ही होगा.

मिटटी का चयन: -

शिमला मिर्च के लिए बलुई और दोमट मिटटी मुफीद रहती है. इसमें इसकी फसल अच्छे से जमती है. जिसमें मिटटी का पी एच मान 5 से 6.5 के आस पास होना चाहिए. इसके लिए चिकनी मिटटी भी अच्छी रहती है. इसके पेड़ को गोबर की सड़ी खाद से मिलने वाले पोषण तत्व ज्यादा फायदे देते हैं. इनकी मदद से इसका रंग और स्वाद दोनों ही अच्छे रहते हैं.

शिमला मिर्च कब लगाई जाती है या बुवाई का समय: -

उत्तरी भारत में शिमला मिर्च की फसल को पाले से बचाने के लिये बसन्त ऋतु की फसल की बुवाई फरवरी से मार्च तथा खरीफ फसल की बुवाई जून-जुलाई में की जाती है। शिमला मिर्च का बीजोत्पादन भारत में समशीतोष्ण क्षेत्रों में होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में इसकी बुआई का उपयुक्त समय मार्च से अप्रेल है। नर्सरी की बुआई के लिये प्रति हैक्टेयर 600 ग्राम शिमला मिर्च का बीच पर्याप्त होता है। एक हेक्टेयर में पौधा रोपण करने हेतु 10-12 नर्सरी की क्यारियां बनाए। इनमें 5 से 6 सेंटीमीटर की दूरी में लाइन से जो 0.5 सेमी गहरी हो उसमें बीज को बोना है। बीज को एग्रोसिन, थाइरम, कैप्टान आदि किसी एक से 2 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचार कर ही बोना चाहिये।

शिमला मिर्च की फसल के लिए जलवायु: -

शिमला मिर्च की खेती के लिए कम तापमान और आद्र जलवायु की आवश्यकता होती है.

शिमला मिर्च की कुछ उन्नत किस्में: -

शिमला मिर्च की उन्नत किस्मों में अर्का गौरव, अर्का मोहिनी, अर्का बंसत, ऐश्वर्या, अंलकार, अनुपम, हरी रानी, भारत, पूसा ग्रीन गोल्ड, हीरा, इंदिरा आदि प्रमुख है.

रोपण और पौधे से पौधे की दूरी: -

सामान्यतः 10-15 सेमी लंबा तथा 4 से 5 पत्तियों वाला पौधा जो कि लगभग 40-45 दिनों में तैयार हो जाता है, रोपण के लिए उसका प्रयोग करें. पौधा रोपण से एक दिन पूर्व शाम के समय क्यारियों में सिंचाई कर देनी चाहिए. इससे पौधा आसानी से निकाला जा सकता है. और पौध को शाम को मुख्य खेत में 60 से 45 सेमी की दूरी पर लगा देना चाहिए. रोपण के बाद खेत की हल्की सिंचाई कर दें. ज्यादा पानी न भरें नहीं तो पौध को जमने में परेशानी हो सकती है.

फूलगोभी के कीट एवं रोगें

फूलगोभी की अगेती किस्म के सापेक्ष पछेती किस्मों में खाद एवं उर्वरकों की ज्यादा आवश्यकता होती है। सामान्यतया गोभी के लिए करीब 300 कुंतल सड़ी हुई गोबर की खाद के अलावा 120 किलोग्राम नत्रजन एवं 60कृ60 किलोग्राम फास्फोरस एवं पोटाश आखिरी जाते में मिला देनी चाहिए। इसकी अगेती किस्मों में कीट एवं रोगों का प्रभाव ज्यादा रहता है लिहाजा बचाव का काम नर्सरी से ही शुरू कर देना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन: -

पौध तैयार करते समय की सावाधानी फसल को आखिरी तक काफी हद तक स्वस्थ रखती है। ढाई बाई एक मीटर की सात क्यारियों में करीब 200 ग्राम बीज बोया जा सकता है। क्यारियों को बैड के रूप में करीब 15 सेण्टीमीटर उठाकर बनाएं। गोबर की खाद हर क्यारी में पर्याप्त हो। बीज बोने के बाद भी छलने से छानकर गोबर की खाद का बुरकाव करें। इसके बाद हजारे से क्यारियों में सिंचाई करते रहें। अगेती किस्मों में पौधे और पंक्ति की दूरी 45 एवं पछती किस्मों में 60 सेण्टीमीटर रखें। अगेती किस्मों में पांच छह दिन बाद एवं पछेती किस्मों में 12 से 15 दिन बाद सिंचाई करें। गोभी में खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई सतत रूप से जारी रहनी चाहिएं।
रोगों में पौध गलन एवं डैम्पिंग आफ रोग एक प्रकार की फफूंद से होता है। इसके कारण पौधों को अंकुरित होने के साथ ही हानि होती है। बचाव हेतु दो से तीन ग्राम कैप्टान से एक किलाग्राम बीज को उपचारित करके बोएं। भूमिशोधन हेतु फारमेल्डीहाइड 160 एमएल को ढाई लीटर पानी में घोलकर जमीन पर छिड़काव करें।

काला सड़न रोग के प्रभाव से प्रारंभ में पत्तियों पर वी आकार की आकृति बनती है जो बाद में काली पड़ जाती है। बचाव हेतु नर्सरी डालाते समय बीज को 10 प्रतिशत ब्लीचिंग पाउडर के घोल अथवा इस्टेप्टोसाइक्लिन से उपचारित करके बोना चाहिए।
गोभी में गिडार या सूंडी नियंत्रण हेतु पांच प्रतिशत मैलाथियान धूल का 20 से 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से बुरकाव करना चाहिए।

किसान और उसकी जरूरतें: अच्छे Tractor से खेती मतलब खेत के साथ किसान का भी विकास

किसान भाइयों को जिसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है उसमें से उसका दराँत (हंसिया), फावड़ा, बैलों की जोड़ी जो की आजकल Tractor में बदल गई है. इन सभी से किसान की सुबह से शाम तक की कहानी चलती है.

पहले किसान जब बैलों से खेती करता था तब अपने पूरे खेत पर फसल नहीं कर पाता था और न ही उतनी पैदावार ले पाता था. आज के इस technology वाले युग में किसानों का काम आसान किया है हमारी Tractor निर्माता कंपनियों ने. जिनमे प्रमुख रूप से देसी और आपकी अपनी Escorts Tractor कंपनी है. Escorts ने हमेशा किसानों के लिए किसानों के साथ वाले वाक्य को चरितार्थ किया है. पहले के Tractor में इतनी technology को प्रयोग में नहीं लाया जाता था. मुझे आज भी याद है 1983 में मेरे घर Escort का 335 Tractor आया था जिसके हेरॉन में सिर्फ 5 के तये होते थे न ही Tractor में पावर स्टेयरिंग थी न ही कोई और technology. लेकिन जो था वो एक किसान के लिए काफी था वो था Escorts का विश्वास जो सालों साल से आज भी कायम है.

आज भी हमें जो मिलता है उसमें संतुष्टि नहीं है जैसा की एक मनुष्य की आदत होती है. अगर मनुष्य जितना है उसी में संतुष्ट हो जाये तो दुनियां में जितने नए नए अविष्कार हो रहे हैं शायद ये नहीं होते. हम सभी अपने जीवन में थोड़ा ज्यादा चाहते हैं। चाहे वह सब्जियों के साथ मुफ्त धनिया मिर्च हो या मुफ्त cashback, हम भारतीय हमेशा उसी में अधिक की तलाश करते हैं। इसी तरह, हमारे किसानों को भी अपने Tractor में इसकी अधिक आवश्यकता होती है, चाहे उसकी शक्ति, सुविधाएँ, उत्पादकता लेकिन समान इनपुट लागत पर और बेहतर या समान ईंधन दक्षता पर। उसी के लिए और अधिक। साथ ही, हमारा कृषि उद्योग बहुत सटीक होने लगा है और जरूरतें भी सटीक हैं।

किसान भी अच्छी तरह से जानते हैं कि वे वास्तव में क्या चाहते हैं। और क्या उन्हें मिलाना चाहिए. इसी वजह से Tractor निर्माताओं को कम से कम लागत में ज्यादा से ज्यादा देने को काम करना पड़ता है. और इसमें कहने की आवश्यकता नहीं है की भारतीय कंपनी Escorts इसमें हमेशा खरी उतरती है.

इसी कडी में Escorts Tractor ने PowerHouse नाम से किसानों के लिए एक नई सीरीज निकाली है जिसकी मुख्य विशेषतायें नीचे दी गई हैं: -

PowerHouse: हमारा किसान क्या चाहता है? – पावर, ईंधन दक्षता, अनुप्रयोग उपयुक्तता, कम रखरखाव लागत, विशेषताएं ये सभी सर्वोत्तम मूल्य पर। Powertrac की नई लॉन्च की गई PowerHouse श्रृंखला इन सभी को पूरी तरह से पूरा करती है। ?यह श्रृंखला किसान को अधिक शक्ति, अधिक सुविधाएँ, अधिक उत्पादकता, सर्वोत्तम मूल्य की पेशकश पर समान ईंधन दक्षता प्रदान करती है। इसके तहत हर ट्रैक्टर ने अब 5 एचपी तक की शक्ति बढ़ाई है।

यह कैसे हो सकता है? : Powertrac ईंधन दक्षता के लिए जाना जाता है। Powerhouse में अपनी ईंधन-बचत तकनीक के साथ, यह खपत किए गए ईंधन की हर बूंद के साथ अधिक ताकत उत्पन्न करता है। हर बूंद से मिले ज्यादा ताकत।

वो कहते हैं न " ये दिल माँगे मोर" ये दिल मांगे एक्स्ट्रा (किसानों की जरूरत को पूरा करना)

श्रृंखला में इसके तहत 6 ट्रैक्टर हैं जो 39भ्च श्रेणी से लेकर 55भ्च श्रेणी तक हैं। वही नीचे सूचीबद्ध हैं:

434 प्लस पावरहाउस – 39HP कैट

439 प्लस पावरहाउस – 45 एचपी कैट

यूरो 42 प्लस पावरहाउस – 47HP

यूरो 47 पावरहाउस – 50HP

यूरो 50 पावरहाउस – 52HP कैट

यूरो 55 पावरहाउस – 55एचपी कैट

Merikheti टीम के कंटेंट हेड श्री दिलीप यादव जी को Escorts Tractor के मार्केटिंग हेड श्री अरविन्द श्रीवास्तव जी ने बताया की Escorts ने हमेशा से किसानों के दिलों में राज किया है. हमारे Tractors ने किसानों के दिल में जो जगह बनाई है उसके लिए Escort हमेशा कार्य करता रहेगा और उसी विश्वास को कायम रखेगा

Swaraj Tractor: आ गया खेती का भी Code

स्वराज (swaraj) मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे में लेकर रहूँगा. ये वाक्य किसने कहा था हमें नीचे कमेंट करके बताएं किसानों से ज्यादा स्वराज (swaraj) को कोण समझ सकता है जिसके बेटे सीमा पर और वो खुद खेत में रहता है. आज हम बात करते हैं स्वराज ट्रेक्टर के नए Product Code की. जिसको स्वराज ने अपने किसानों के हित में बनाया है. स्वराज ट्रेक्टर (Swaraj Tractor) 1974 में शुरू हुआ और आज किसानों के बीच में एक जाना पहचाना नाम बन गया है. हमारे किसान भाइयों को छोटे छोटे काम करने के लिए छोटे tractor की आवश्यकता रहती है. जैसे आलू की फसल में दवाओं का छिड़काव करना हो या सब्जी में निराई गुड़ाई करनी हो या और भी बहुत कुछ. हाथ से चलने वाले यन्त्र को tractor का रूप दे दिया है Code एक स्मार्ट, बहु-उपयोगी उपकरण है जो कि किसानों को उनकी जरूरतों को अत्यंत सक्षमता के साथ पूरा करने में मदद करता है। इसका सुडौल आकार और motorcycle जैसे हैंडल इसे फसल देखभाल के कामक. ाजों (जैसे कि खरपतवार और छिड़काव) के लिए अतिउत्तम बनाता है। यह किसानों की मजदूरों पर निर्भरता को काफी हद तक घटाता है और कामकाज के खर्चों में काफी कमी लाता है। इससे डीजल और समय की बचत होती है तथा किसान की काफी हद तक मजदूरों पर निर्भरता कम होती है.

प्रोडक्ट स्पेसिफिकेशन्स नीचे दी गई हैं.

प्रोडक्ट स्पेसिफिकेशन:-

इंजन	पॉवर	8.28 kW (11.1 HP)
	डिस्प्लेसमेंट	389 cm3
	रेटेड तद्उपद	3600
	सिलिंडर्स की संख्या	1
	फ्युअल टाइप	पेट्रोल (4स्ट्रोक)
	स्टार्टिंग सिस्टम	सिर्फ रिकॉयल स्टार्ट या सेल्फ स्टार्ट + रिकॉयल स्टार्ट टाइप
	एयर क्लीनर	ड्राई
ट्रांसिमशन और फ्रंट एक्सल	गियर बॉक्स टाइप	स्लाइडिंग मेश
	क्लच टाइप	सिंगल क्लच, ड्राई डायाफ्राम टाइप
	स्पीड ऑप्शन्स	6F. 3R
	फॉरवर्ड स्पीड रेंज	1.9 km/h से 16.76 km/h
	फ्युअल टाइप	2.2 km/h से 5.7 km/h
	स्टार्टिंग सिस्टम	फिक्स्ड
	डिफ्रेन्शियल लॉक	Yes
	स्टियरिंग	मैकेनिकल
वेहिकल स्पे. सिफिकेशन	ग्राउंड क्लियरेन्स (स्टै.)	266 mm
	ग्राउंड क्लियरेन्स (हाई कॉन्फिगुरेशन)	554 mm
	बाई-डायरेक्शनल	180 degree
	चेसीस	लैडर फ्रेम टाइप
पीटीओ व हाइ. ड्रॉलिक्स	पीटीओ	1000
	हाईड्रॉलिक्स	टू-वे हाइड्रॉलिक्स
	लिफ्टींग क्षमता	220 kg @ hitch
ब्रेक्स	ब्रेक	तेल में डूबे हुए ब्रेक्स
वेट व डायमेन्शन	अगला टायर	101.6 mm x 228.6 mm (4x9)
	पिछला टायर	152.4 mm x 355.6 (6x14)
	संपूर्ण उंचाई	1180 mm
	संपूर्ण चौड़ाई	890 mm
	व्हील बेस	1463 mm
	मशीन का वजन	455 kg

सेब के गूदे से उत्पाद बनाने को लगाएं उद्यम

प्रसंस्करण को बढ़ावा देने की सरकार की नतियां जैव विविधता वाले देश के लिए पर्याप्त नहीं हैं। आलू के सीजन में आलू उत्पादक क्षेत्र में आलू खराब होता है। टमाटर की बात हो या कीमती सेब की। हर फल का यही हश्र होता है। प्रसंस्करण उद्योगों की कमी किसानों को फलों की उचित कीमत नहीं मिलने देतीं वहीं किसानों की एक तिहाई तक फसल खराब हो जाती है। कभी कभार कोस्टल क्राप बाजरा के बिस्किट आदि बनाने की तकनीक विकसित करने की तो कभी सेब का जूस निकाल कर बेकार फेंकी जाने वाली लुग्दी या छूंछ के उत्पाद बनाने की खबरें शुकून देती हैं लेकिन इन्हें यातो सरकार का साथ नहीं मिलता या इन तकनीकों पर काम करने वाले लोगों को मदद नहीं मिलती कि ये तेजी से प्रसार कर सकें। यही कारण है कि यह चीजें देश में आम प्रचलन में नहीं आ पातीं।

हालिया तौर पर डा वाई एस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी हिमाचल प्रदेश के वैज्ञानिकों ने सेब का जूस निकालने के बाद बचने वाले पोमेस यानी अंदरूनी गूदे से कई उत्पाद बनाने की दिशा में काम आगे बढ़ाया है। विश्वविद्यालय के फूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी विभाग ने केक, बिस्किट, पोमेस पाउडर एवं जेम आदि उत्पाद तैयार किए हैं। इसके अलावा एप्पल पेक्टिन केमिकल भी तैयार किया है। इससे जैली बनाई जाती है।

विदित हो कि सेब उत्पादक राज्य हिमाचल प्रदेश में सेब का जूस निकालने के बाद उसके गूदे को अधिकांशतः यूंही फेंका जाता है। इससे कीमती फल का बड़ा हिस्सा बेकार चलता जाता है। इतना ही नहीं हिमाचल में ग्रीन हाउस, पॉली हाउस की चेन विकसित होने से कम जमीन पर खेती की दिशा में काफी काम आगे बढ़ा है। इसके बाद भी काफी फल रख रखाब के अभाव में सड़ जाते हैं।

रोजगार के अवसर देगी तकनीक:-

बेरोजगार सेब का पोमेस आधारित उद्योग लगा सकते हैं। इसके लिए नौणी विश्वविद्यालय मात्र 40 हजार में तकनीकी ज्ञान प्रदान करेगा। वह पोमेस से बनने वाले उत्पादों को संरक्षित करने के तरीके एवं स्वादानुसार उत्पाद बनाने की ट्रेनिंग भी देगा। इस काम को शुरू करने के लिए तकरीबन 10 लाख रुपए की लागत आती है। पोमेस आधारित यूनिट के संचालन के लिए आठ से 10 लोगों की जरूरत होती है। पोमेस की यूनिट के साथ जूस की यूनिट भी लगाई जा सकती है ताकि कच्चे माल पोमेस को खरीदने के लिए इधर उधर न भटकना पड़े और पोमेस उत्पाद की गुणवत्ता नियंत्रित रह सके। विदित हो कि सेब से जूस निकालने के बाद पोमेस को फ्रीज करना होता है अन्यथा उसमें तेजी से फरमंटेशन होन की संभावना बन जाती है।

उत्तर प्रदेश में प्राकृतिक खेती के लिए राष्ट्रीय गठबंधन की शुरुआत

प्राकृतिक खेती के लिए राष्ट्रीय गठबंधन के उत्तर प्रदेश के अध्याय की उत्तर प्रदेश के बांदा में किसान प्रेम जी की बगिया में बैठक से शुरूआत हुई। यह एक राष्ट्रीय स्तर का नेटवर्क है जो सैकडों संस्थाओं और अलग-अलग राज्य सरकारों के साथ प्राकृतिकध्जैविक खेती पर काम कर रहा है। इस शुरुआती बैठक में राज्य में 30 से अधिक लोग एवं विभिन्न जनपदों की तकरीबन 20 संस्थाओं ने भाग लिया। बैठक की शुरूआत में आंध्र प्रदेश से स्वाति ने कहा कि यह प्राकृतिक खेती के लिए विश्व में सबसे बड़ा अभियान है। कहा कि प्राकृतिक खेती के लिए किसानों को सक्षम बनाना होगा। उन्होंन यह भी कहा कि जैव इनपुट संसाधन केन्द्र के माध्यम से सामुदायिक स्तर पर कीटनाशकों और रासायनिक खादों के विकल्पों को बड़े पैमाने पर बनाया जा सकता है। बैठक में सभी संस्थाओं ने अपने काम का विवरण दिया और काम में आने वाली चुनौतियों और राज्य में प्राकृतिक खेती को आगे बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में सुझाव व्यक्त किए। इनमें श्रमिक भारती कानपुर, हरतिका छत्तरपुर, आगा खान फाउण्डेशन बहराइच, नवभारत समाज कल्याण समिति मुरादाबाद, सर सईद ट्रस्ट आयोध्या, युवा कौशल विकास मण्डल हमीरपुर, वनवासी सेवा आश्रम सोनभद्र, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्था चित्रकूट, जीवा फाउण्डेशन बांदा, ग्रामोन्नति संस्था महोबा, अरुणोदय संस्थान, सम्मीपुर नेचर फॉर्मिंग आदि प्रमुख थीं।

अंतिम सत्र में अगले चार माह के लिए साझे कार्यक्रम तय हुए। इसमें प्राकृतिक खेती के लिए वातावरण तैयार किया जाए। प्राकृतिक खेती के लिए काम करने वाली संस्थाओं को आपस में जोड़ना। साझी समझ विकसित करने के लिए एक माह में चार चार दिवसीय शिविर आयोजित किए जाएंगे। धन के लिए नेटवर्किंग तैयार करना।

प्रधानमंत्री कुसुम योजनारू किसानों को बडा तोहफा, सोलर पंप (Solar Pump) पर 90 प्रतिशत तक की सब्सिडी

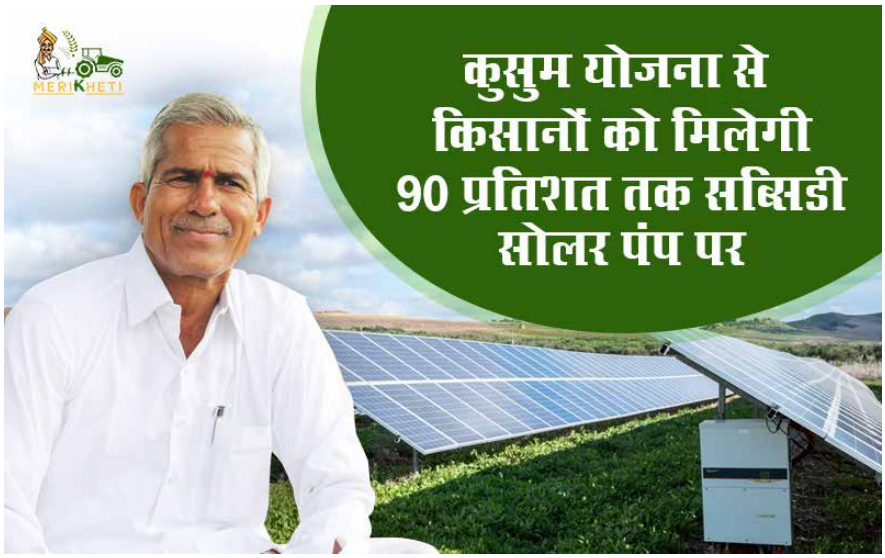

केन्द्र सरकार किसानों की आय बढ़ाने व खेती की लागत कम करने योजनाएं लाकर किसानों की तरह-तरह से मदद करना चाहती है। केन्द्र सरकार ने इसी कड़ी में प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत किसानों को सोलर पम्प खरीदने के लिए बहुत अच्छी आकर्षक योजना बनायी है। इस योजना के तहत किसानों को सोलर पम्प की लागत का केवल 10 प्रतिशत हिस्सा देना होगा बाकी सरकार और बैंक क्रेडिट से मिलेगा। आइये जानते हैं इस बारे में विस्तार से।

किसानों की समृद्धि में सहायक है ये योजना:-

प्रधानमंत्री कुसुम योजना के दूसरे चरण में सोलर पम्प खरीदने की जो सब्सिडी दी जा रही है उससे किसान भाई कम से कम पैसे में अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए सिंचाई की सुविधा जुटा सकते हैं। इसके अलावा बिजली से चलने वाले छोटे मोटे काम भी आसानी से कर सकते हैं। इस तरह से किसान भाई अपने परिवार की आर्थिक स्तर उठा सकते हैं। साथ ही खेती से जुड़े ऐसे काम भी कर सकते हैं जिनसे किसानों को अतिरिक्त आय मिल सके। इस प्रकार किसान भाई इस योजना से लाभ उठायेंगे तो उनकी कृषि पैदावार भी बढ़ेगी। साथ ही उनके गांव का भी विकास हो जायेगा।

1.योजना का दूसरा चरण हो गया है शुरू, आवेदन करें
2. किसानों को क्या लाभ
3. महाराष्ट्र सरकार दे रही है कितनी सब्सिडी
4. दूसरे राज्यों में ये है व्यवस्था
5. पात्रता की शर्तें
6. आवश्यक दस्तावेज
7. आवेदन की प्रक्रिया
8. ऑनलाइन आवेदन ऐसे करें

योजना का दूसरा चरण हो गया है शुरू, आवेदन करें:-

प्रधानमंत्री कुसुम योजना का दूसरा चरण लागू किया जा रहा है। योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन करना शुरू हो गया है। जो किसान भाई सोलर पम्प खरीद कर योजना का लाभ प्राप्त करनाचाहते हों तो वे आवेदन कर सकते हैं। पीएम कुसुम योजना के दूसरे चरण में किसान भाइयों को सिर्फ 10 प्रतिशत का हिस्सा देना होगा बाकी 90 प्रतिशत की सब्सिडी का लाभ मिलेगा। इस योजना का 60 प्रतिशत हिस्सा सरकार की ओर से सब्सिडी के रूप में वहन किया जाता है बाकी 30 प्रतिशत हिस्सा क्रेडिट के रूप में बैंक की ओर से दिया जाता है।

किसानों को क्या हो सकता है लाभ:-

सोलर पम्प लगाने से किसान भाइयों को सिंचाई के अलावा अन्य वो कार्य जो बिजली से होते हैं, बिना किसी परेशानी के होंगे। साथ बिजली में आत्मनिर्भरता होगी। किसान भाइयों को बिजली कटौती, अधिक बिजली बिल या डीजल की महंगाई की समस्या से भी छुटकारा मिल जायेग.ा। इसके अलावा यदि किसान भाई अपनी जरूरत से अधिक बिजली पैदा कर लेते हैं तो वे उसे ग्रिड को बेच कर घर बैठे लाभ भी कमा सकते हैं।

महाराष्ट्र सरकार दे रही है कितनी सब्सिडी:-

केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के सहयोग से यह योजना चलायी जा रही है। इस योजना के तहत राज्य सरकारें अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार अपने-अपने राज्य के किसानों को अलग-अलग सब्सिडी दे रहीं है। महाराष्ट्र सरकार ने अपने राज्य के किसानों को प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत सोलर पम्प खरीदने वाले किसान भाइयों को 90 प्रतिशत तक सब्सिडी दिये जाने का प्रावधान किया है।

दूसरे राज्यों में ये व्यवस्था:-

इसके अलावा राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश भी अपने-अपने किसानों को प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत सोलर पम्प खरीदने वालों को 90 प्रतिशत सब्सिडी दिये जाने की व्यवस्था की है जबकि हरियाणा सरकार ने अपने किसानों को इस योजना के तहत सोलर पम्प खरीदने के लिए 75 प्रतिशत सब्सिडी दिये जाने का प्रावधान किया है।

पात्रता की शर्तें:-

प्रधानमंत्री कुसुम योजना के दूसरे चरण में सोलर पम्प खरीदने वाले किसान भाइयों की पात्रता के लिए कौन-कौन सी शर्तें तय की गयी हैं, जानिये वे इस प्रकार हैं:-

भारत का स्थायी निवासी होना चाहिये

इस योजना में 0.5 मेगावाट से 2 मेगावाट तक की क्षमता वाले सोलर प्लांट के लिए आवेदन किया जा सकता है।

किसानों द्वारा स्वयं निवेश करने पर किसी प्रकार की वित्तीय योग्यता की जरूरत नहीं है। लेकिन यदि आवेदक किसी डेवलपर कीमदद लेता है तो उस डेवलपर के लिए 1 करोड़ रुपये प्रति मेगावाट की नटवर्ध होना जरूरी होगा।

आवेदनकर्ता के लिए अपनी भूमि के अनुपात में 2 मेगावाट का सोलर प्लांट लगाने क्षमता है तो कोई बात नहीं वरना वितरण निगम द्वारा अधिसूचित क्षमता के अनुसार ही आवेदन किया जा सकता है।

आवश्यक दस्तावेज:-

1. आवेदनकर्ता का आधार कार्ड होना चाहिये
2. आवेदक का राशन कार्ड भी होना चाहिये
3. आवेदक के पास ऐसा मोबाइल नंबर होना चाहिये जो आधार कार्ड से लिंक हो।
4. बैंक खाता की डिटेल देनी होगी, बैंक खाता की पासबुक की कॉपी चाहिये।
5. किसान की जमीन की जमाबंदी की कॉपी
6. रजिस्ट्रेशन की प्रति
7. यदि डेवलपर से मदद ली जा रही है तो उसकी सीए द्वारा जारी नेटवर्थ सर्टिफिकेट जरूरी होगा।

आवेदन की प्रक्रिया:-

प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत सोलर पम्प खरीद पर सब्सिडी लेने के लिए किसान भाइयों को ऑनलाइन आवेदन करना होगा। आपको इसके लिए केन्द्र सरकार की अधिकृत वेबसाइट पर जाना होगा या फिर अपने राज्य की वेबसाइट पर भी जाकर आवेदन कर सकते हैं। इसकी पूर्ण प्रक्रिया इस प्रकार होगी।

-आपको ऑनलाइन आवेदन के लिए केन्द्र सरकार की वेबसाइट https://mnre.gov.in पद पर जाना होगा।

-यदि आप महाराष्ट्र सरकार के समक्ष आवेदन करना चाहते हैं तो आपको उनकी वेबसाइट https://kusum.mahaurja.com/solar/benf_login पर जाकर लॉगिन करना होगा।

इसी तरह अन्य राज्यों की अलग-अलग वेबसाइट पर जाकर भी प्रधानमंत्री कुसुम योजना मे सोलर पम्प खरीदने का आवेदन किया जा सकता है।

ऑनलाइन आवेदन ऐसे करें

-जब आप वेबसाइट पर लॉगइन करेंगे तो आपको होम पेज पर आवेदन पत्र का लिंक दिखाई देगा। जिसको क्लिक करें।

-क्लिक करते ही आपको आवेदन पत्र सामने ही दिख जायेगा। जिसको पढ़कर उसमें मांगी गयी जानकारी को भर दें।

-आपकी जानकारी के अनुसार मांगे गये दस्तावेजों की डिटेल और उनकी स्कैन कॉपी अपलोड कर दें।

-इसके बाद फार्म और अपलोड किये जाने वाले दस्तावेजों को एक बार ध्यान से चेक करने के बाद सबमिट कर दें।

इस तरह से आपका आवेदन फार्म सरकार के पास जमा हो जायेगा। बाद बाकी सरकार की ओर से कार्रवाई की जायेगी।

जानिए अनाज भंडारण के सुरक्षित

किसान भाइयों आपको यह जानकर अवश्य आश्चर्य होगा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। हम सदियों से अनाज पैदा करते हैं और उसे सुरक्षित भी रखने के अनेक उपाय करते हैं। आज हम आधुनिक खेती करते हैं। इसके बावजूद हमारे देश में अनाज का सुरक्षित भंडारण एक चुनौती बना हुआ है। लगभग 20 से 25 प्रतिशत अनाज उचित भंडारण न होने की वजह से प्रतिवर्ष खराब हो जाता है। इसका खामियाजा किसान भाइयों को उठाना पड़ता है। आज हम अनाज के सुरक्षित भंडारण के खास टिप्स को जानते हैं। इन टिप्स से जहां अनाज सुरक्षित रहेगा वहीं आपको नमी, दीमक, चूहों आदि से छुटकारा मिल जायेगा।

अनाज पर खतरे के प्रमुख कारण:-

1. फसल की कटाई के साथ ही अनाज के भंडारण कीसुरक्षा की प्रक्रिया शुरू कर देनी चाहिये। फसल कटाई के काम लाये जाने वाले यंत्रों से व मौसम के उतार चढ़ाव से फसल को नमी व कीट का खतरा उत्पन्न हो जाता है।
2. अनाज भंडारण की गुणवत्ता को हानि पहुंचाने वाले कारणों में कीड़ों का प्रकोप होते हैं। ये कीड़े बीच व मिट्टी के अतिरिक्त फसलों की गहाई, ढुलाई में इस्तेमाल किये जाने वाले यंत्रों के माध्यम से भंडारण तक पहुंच सकते हैं। इसलिये नमी व कीटों का बचाव यही से शुरू करना चाहिये।
3. अधिक नमी होने के कारण अनाज में कीड़ों का प्रकोप अधिक होता है। इसके अलावा अनाज में फफूंदी लग जाती है। अनाज सड़ जाता है। अनाज खाने या बेचने योग्य नहीं रहता है।
4. अनाज में कटाई समय ही कीट लग जाते हैं जो अनाज पर अंडे देने लगते हैं। बाद में इन अंडों से निकलने वाले इल्ली या लट अनाज को खाकर खोखला कर देती है।
5. चूहे अनाज के दुश्मन हैं। ये खाते कम खराब अधिक करते हैं। चूहों के मल-मूत्र और बाल अनाज में मिल जाने से अनाज खराब हो जाता है।
6. भण्डारण गृह, कोठियां व बोरे में साफ सफाई न होने से भी कीट लग जाते हैं। क्योंकि भंडारण में अधिकांश पुराने बोरों का इस्तेमाल किया जाता है। इन पुराने बोरों में कीटों के अंडे हो सकते हैं, जो भंडारण में अनाज को बर्बाद करने लगते हैं।
7. चार ही मुख्य कीट ऐसे हैं जो अनाज को बरबाद कर देते हैं। ये इस प्रकार हैं

गेहूं का खपरा: ये कीट गेहूं के अलावा चावल, मक्का, जौ, ज्वार, बाजरा में भी लगता है। यह कीट अनाज में अधिक नमी आने के कारण होता है।

आंटे की सुंडी भी ऐसा ही कीट है जो आटा, सूजी, मैदा में तो लगता ही है। साथ ही गेहूं, मक्का, चावल के दानों को भी बरबाद कर देता है।

चावल का घुन भी ऐसा कीट है जो चावल के साथ गेहूं, मक्का, जौ, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों में लगता है।

दालों का भृंग ऐसा कीट है जो सभी प्रकार की दालों को नष्ट कर देता है। ये अरहर, उड़द, चना, मूंग, मटर, मोठ, चंवला, मसूर आदि दालों को पूरी तरह से नष्ट कर देता है।

सुरक्षित अनाज भंडारण के खास उपाय:-

1.**फसल कटाई व ढुलाई के समय सावधानी**

अनाज में कीटों व नमी का प्रभाव फसल की कटाई के साथ ही पड़ने लगता है, जिसकी कोई भी परवाह नहीं करता है। नतीजा यह होता है कि फसल को वहीं से नुकसान होने लगता है और भंडारण में नमी और कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसके लिए अनाज की ढुलाई से पहले ट्रैक्टर ट्रॉली को अच्छी तरह से धो कर धूप में सुखा लेना चाहिये। फिर अनाज को भंडारण से पहले 8-10 दिन तक धूप में सुखा लेना चाहिये। सूखे अनाज की पहचान कर लेना चाहिये। अनाज को सूखने के बाद उसे शाम को भंडारण नहीं करना चाहिये। बल्कि रात भर उसे छाया में रख कर ठंडा करना चाहिये। उसके बाद अगले दिन सुबह भंडारण करना चाहिये।

2.**भंडारण के समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिये**

भंडारण के समय अनाज को भरने से पहले बोरे या कोठियों को अच्छी तरह से साफ सफाई कर लेनी चाहिये। इन्हें कीट मुक्त करने के लिए उपचार भी कर लेना चाहिये। जैसे अनाज भरने से पहले बोरों को एक प्रतिशत मैलाथियॉन के घोल में आधे घंटे डुबो कर रखें और फिर 2 से तीन दिन तक उलट-पलट कर कड़ी धूप में सुखाएं। तैयार अनाज को सीधे जमीन पर नहीं रखना चाहिये। इससे जमीन से लगने वाले कीड़ों व नमी से बचाव होगा। भंडारण से पहले भूसी, कंकर व कटे-फटे अनाज को अलग निकाल कर साफ कर लेना चाहिये तथा अनाज को कम से कम 15 दिन तक सुखाना चाहिये।

3. **भंडारगृह की सफाई करें**

भंडारण से पहले भंडारगृह की अच्छी तरह से साफ सफाई करें। भंडारगृह की छत, फर्श, खिड़कियां व दरवाजे सभी को अच्छी तरह से साफ करते उसमें तारपीन का तेल लगा देना चाहिये। फर्श में यदि दरारें हों तो उन्हें सीमेंट से भर देना चाहिये। दीवारों और फर्श के जोड़ों को भी अच्छी तरह से भराई कर देनी चाहिये। सीमेंट की दीवारें हों तो अच्छा वरना कच्ची दीवारों में पपड़ी आदि हों तो उनका भी उपचार कर देना चाहिये। इसके अलावा अनाज रखने से दस दिन पूर्व कमरे में आधा प्रतिशत मैलाथियॉन का घोल बनाकर तीन लीटर प्रतिवर्ग मीटर के हिसाब से छिड़काव करके छोड़ देना चाहिये। अच्छी तरह से सूखने क बाद ही गोदाम में अनाज को रखें। चूहों से बचाव के लिए दरवाजों के नीचे की तरफ लोहे की पत्तियां लगवा देना चाहिये।

4. **कैसे करें सुरक्षित भंडारण**

अनाज को नमी से बचाने के लिए भण्डारण करते समय कुछ सावधानियां बरतनी चाहिये। अनाज के भरे बोरों को सीधे फर्श पर नहीं रखना चाहिये। लकड़ी के फट्टों को पहले बिछाया जाना चाहिये। बोरो को जमीन से ऊपर और दीवालों से एक-डेढ़ फिट दूर तथा छत से एक या दो फिट नीचे रखा जाना चाहिये। कोठी में अनाज भरने के लिए पहले कोठी को साफ-सफाई करके उपचारित करना चाहिये। अनाज भरकर ढक्कन लगा देना चाहिये। फिर मोम या हवा को रोकने वाला कोई अन्य लेप लगा देना चाहिये। यदि कोठी को उपचारित करने के लिए पेस्टीसाइड लगाया हो तो उस कमरे में उठना-बैठना, सोना सब बंद कर देना चाहिये। बच्चों को उस कमरे से दूर ही रखना चाहिये। जब कभी अनाज निकालने जाना हो तो मुंह पर कपड़ा बांध कर जायें।

5. **परम्परागत तकनीक भी अपनाएं**

अनाजों को सुरक्षित रखने के लिए हमेशा से अपनाये जा रहे परम्परागत तरीकों को भी इस्तेमाल किया जाना चाहिये। परम्परागत तरीकों के अनुसार अनाज व दालों में सरसों का तेल लगाकर रखना होता है। राख मिला कर रखना होता है तथा नीम व करंज के पत्ते बिछाकर रखने होते हैं। राख को छान कर व सुखाकर ही मिलाया जाना चाहिये। इससे अनाज व दालें खराब नहीं होतीं तथा कीट अपने आप ही मर जाते हैं।

6. **चूहा नियंत्रण**

अनाज को बरबाद करने में चूहे बहुत खतरनाक होते हैं। ये जितना अनाज खाते हैं उससे दस गुना अनाज कुतर के बरबाद कर देते हैं। इसके अलावा इनके बाल झड़ने तथा मल-मूत्र से अनाज सड़ जाता है। इसलिये इनका नियंत्रण करना बहुत जरूरी होता है। चूहा नियंत्रण का काम मई जून माह में करना चाहिये क्योंकि उस समय खेत खाली हो जाते हैं। खेतों में लगने वाले चूहे भी आसपास के घरों में हमला करते हैं। चूहों की रोकथाम के लिए दो से तीन प्रतिशत जिंक फॉस्फाइड मिलाकर खाने का सामान देना चाहिये। लेकिन चूहे बहुत चतुर होते हैं। इसलिये पहले उन्हें उस तरह की बिना जहर मिली चीजें खिलाने का देना चाहिये। उसके बाद एक दिन जहर मिली वस्तु देने से वो आसानी से खा लेते हैं।

भंडार गृह में चूहों की रोकथाम के लिए बाजरा या किसी अनाज का विष आहार बनाना चाहिये। इसके लिए बाजरा या किसी अन्य अनाज में मूंगफली का तेल लगाना चाहिये। इसके बाद एक किलो अनाज को 20 से 30 ग्राम जिंक फॉस्फाइड पाउडर मिलाकर लकड़ी से अच्छी तरह मिला लें। फिर इनके दानों को भंडारघरों में दीवार के किनारे-किनारे बिखेर देना चाहिये। इन दानों को खा कर चूहे मर जायेंगे। अगले दिन बचे हुए दानों को समेटकर उन्हें नष्ट कर देना चाहिये। भंडारगृह यदि आवास में हो तो कम जहरीली एन्टी कोंगुलेट, ब्रोमोडायोलोन का प्रयोग किया जाना चाहिये। चूहों के लिए विष आहार तैयार करते समय मुंह पर रूमाल आदि बांध लेना चाहिये।

7. **दीमक नियंत्रण**

दीमक का प्रकोप वैसे खेतों में होता है। फिर भी भंडारगृह की दीवारों या दरवाजों, खिड़कियों में दीमक का प्रकोप हो तो 10 लीटर पानी में एक किलो लिंडेन पाउडर का घोल बनाकर उपचार करें।

8. **कीट नियंत्रण के उपाय**

अनाज को सुरक्षित रखने क लिए कीट नियंत्रण बहुत आवश्यक है। कीट नियंत्रण दो तरीके से किया जाता है। पहला अनाज को कीटों से बचाने के लिए और दूसरा अनाज में कीटों के लगने के बाद नियंत्रण किया जाता है। कीटों से बचाने के लिए प्रतिमीट्रिक टन अनाज के लिए 30 मिली लीटर ईडीबी एम्पयूल तथा एल्यूमि. नियम फॉस्फाइड यानी सेल्फोस की 3 ग्राम की गोली प्रति मीट्रिक टन के हिसाब से डालनी चाहिये। कीटों का आक्रमण होने के बाद 1 ई डी बी एम्पयूल की 3 मिली लीटर प्रति क्विंटल के हिसाब से डालनी चाहिये। यह बहुत ही घातक व जहरीली दवा है, इसे खुले मुंह या खुले में नहीं डालना चाहिये। इससे स्वास्थ्य को काफी नुकसान भी हो सकता है। यह कार्य विशेषज्ञों की सलाह से किया जाना चाहिये।

कमजोर जमीन में औषधीय पौधों की खेती

खुशबूदार औषधीय पौधों की समूचे विश्व में मांग रहती है। इसका कारण यह है कि इनका प्रयोग कई तरह की औषधियों एवं मेकअप आदि के सामान बनाने में होता है। बाजार में इनकी मांग के चलते किसानों को इनकी खेती से अच्छी आय होती है। ध्यान रखने वाली बात यह है कि किसान उन्हीं फसलों का चयन करें जिसका बाजार उनके आस-पास की मण्डी में हो। भारत में करीब अस्सी लाख एकड़ जमीन बंजर है। इसमें औषधीय पौधों की खेती बड़ी आसानी से हो सकती है। इससे किसानों की आय तो होगी ही देश की अर्थ व्यवस्था में भी कृषि की हिस्सेदारी बढ़ेगी।

बंजर जमीन को सुधारने पर अच्छी खासी रकम खर्च होती है। यदि किसान उन फसलों की खेती करें जिन्हें बंजर जमीन में किया जा सकता है तो उन्हें दोहरा फायदा हो। उन्हें जमीन सुधारने में लगने वाली कीमत भी नहीं लगानी होती साथ ही फसल से अतिरिक्त आय भी हो जाएगी।

क्षारीय यानी नमकीन जमीन में भी कई तरह के खुशबूदार औषधीय पौधे लगाए जा सकते हैं। इनसे पारंपरिक फसलों से ज्यादा पैसा भी किसानों को मिल सकता है। पामरोज, नींबूघास, गंदा, विटीवर घास खुशबूदार पौधों की श्रेणी में आते हैं। इनकी खेती कमजोर जमीन में हो सकती है।
पामरोज तेल वाली बारहमासी घास होती है। इसमें 90 प्रतिशत तक जिरेनियाल अंश वाला तेल पाया जाता है। यह गरम एवं ठंडे इलाकों में भी आसानी से उगाई जा सकती है। नींबूघास भी बारहमासी होती है। इससे भी तेल निकलता है। इसे ठंडी एवं कम ठंडी आबोहवा में आसानी से उगाया जा सकता है। इससे भी 90 प्रतिशत तेल प्राप्त किया जा सकता है।
इसकी सुगंधी, प्रगति, प्रधान, कावेरी एवं ओडी 19 किस्में बेहद अच्छी हैं।

गेंदा की टी मिनाट, टी पेचुएल व टी इरेक्टा किस्म का इस्तेमाल भोजन, स्वाद व मेकअप का सामान बनाने के लिए किया जाता है। इससे तेल व इत्र आदि भी हासिल किया जाता है। विटीवर घास मिट्टी को बेहतर करने की कूबत रखती है। इसकी खेती जमीन को सुधारने के लिए की जाती है। यह हर तरह से लाभदायक भी है।

MERI KHETI
DI 734
Power Plus
भरोसा अब और भी ज्यादा अधिक ताकत,
रफ्तार और माइलेज का वादा
37
-HP-
SONALIKA
DI-734
SONALIKA
SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION

New Holland
3032 35hp 26.09 kW TX
New Holland
3230 42hp 31.31 kW TX
New Holland
3630 SUPER Plus TX

फरवरी माह के कृषि कार्य

गेहूं: -

गेहू की फसल में मुख्य कार्य उर्वरक प्रबंधन एवं सिंचाई का रहता है। ज्यादातर इलाकों में गेहूं में तीसरे एवं चौथे पानी की तैयारी है। तीसरे पानी का काम ज्यादातर राज्यों में पिछले दिनों हुई बरसात से हो गया है। गेहूं में झुलसा रोग से बचाव के लिए डायथेन एम 45 या जिनेब की 2.5 किलोग्राम मात्रा का पर्याप्त पानी में घोलकर छिड़काव करें। गेरुई रोग से बचाव के लिए प्रोपिकोनाजोल यानी टिल्ट नामक दवा की 25 ईसी दवा को एक एमएल दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिडकाव करें। टिल्ट का छिडकाव दानों में चमक एवं वजन बढ़ाने के साथ फसल को फफूंद जनित रोगों से बचाता है। छिडकाव कोथ में बाली निकलने के समय होना चाहिए। फसल को चूहों के प्रकोप से बचाने के लिए एल्यूमिनियम फास्फाइड का प्रयोग करें।

जौ: -

जौ की फसल में कंडुआ जिसे करनाल बंट भी कहा जाता है लग सकता है। यह रोग संक्रमित बीज वाली फसल में हो सकता है। बचाव के लिए किसी प्रभावी फफूंदनाशक दवा या टिल्ट नामक दवा का छिड़काव करें।

चना: -

चने की खेती में दाना बनने की अवस्था में फली छेदक कीट लगने शुरू हो जाते हैं। बचाव हेतु बीटी एक किलोग्राम या फेनवैलरेअ 20 प्रतिशत ईसी की एक लीटर मात्रा का 500 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

मटर : -

मटर में इस सयम पाउड्री मिल्डयू रोग लगता है। रोकथाम के लिए प्रति हैक्टेयर दो किलोग्राम घुलनशील गंधक या कार्बेन्डाजिम नामक फफूंदनाशक की 500 ग्राम मात्रा 500 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करें।

राई सरसों : -

सरसों की फसल में इस समय तक फूल झड़ चुका होता है। इस समय माहू कीट से फसल को बचाने के लिए मिथाइल ओ डिमोटान 25 ईसी प्रति लीटर दवा पर्याप्त पानी में घोलकर छिडकाव करें।

मक्का : -

रबी मक्का में सिंचाई का काम मुख्य रहता है। लिहाजा तीसरा पानी 80 दिन बाद एवं चौथा पानी 110 दिन बाद लगाएं। यह समय बसन्तकालीन मक्का की बिजाई के लिए उपयुक्त होने लगता है।

गन्ना: -

गन्ने की बसंत कालीन किस्मों को लगाने के समय आ गया है। मटर, आलू, तोरिया के खाली खेतों में गन्ने की फसल लगाई जा सकती है। गन्ने की कोशा 802, 7918, 776, 8118, 687, 8436 पंत 211 एवं बीओ 91 जैसी अनेक नई पुरानी किस्में मौजूद हैं। कई नई उन्नत किस्तें गन्ना संस्थानों ने विकसित की हैं। इनकी विस्तृत जानकारी लेकर इन्हें लगाया जा सकता है।

फल वाले पौधे : -

नीबू वर्गीस सिट्रस फल वाले मौसमी, किन्नू आदि के पौधों में विषाणु जनित रोगों के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोरोपिड 3 एमएल प्रति 10 लीटर पानी में, कार्बारिल 20 ग्राम 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। नाशपाती एवं सतालू आदि सभी फलदार पौधों के बागों में सड़ी गोबर की खाद, मिनरल मिक्चर आदि तापमान बढ़ने के साथ ही डालें ताकि पौधों का समग्र विकास हो सके।

आम के खर्रा रोग को रोकने के लिए घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत डब्ल्यूपी 0.2 प्रतिशत दवा की 2 ग्राम मात्रा का प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करें। इसके अलावा अन्य प्रभावी फफूंदनाशक का एक छिडकाव करें। कीड़ों से पौधों को सुरक्षत रखने के लिए इमिडाक्लो. रोपिड का एक एमएल प्रति तीन लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

फूल वाली फसलें : -

गुलदाउदूजी के कंद लगाएं।

गर्मी वाले जीनिया, सनफ्लावर, पोर्चलुका, कोचिया के बीजों को नर्सरी में बोएं ताकि समय से पौध तैयार हो सके।

सब्जी वाली फसलें : -

आलू की पछेती फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिए मैंकोजेब या साफ नामक दवा की उचित मात्रा छिडकाव करें।

प्याज एवं लहसुन में संतुलित उर्वरक प्रबधन करें। खादों के अलावा शूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें। फफूंद जनित रोगों से बचाव एवं थ्रिप्स रोग से बचाव के लिए कारगर दवाओं का प्रयोग करें।

भिन्डी के बीजों की बिजाई करें। बोने से पहले बीजों को 24 घण्टे पूर्व पानी में भिगोलें।

कद्दू वर्गीय फसलों की अगेती खेती के लिए पॉलीहाउस, छप्पर आदि में अगेती पौध तैयार करें।

पशुधन: -

पशुओं की बदलते मौसम में विशेष देखभाल करें। रात के समय जल्दी पशुओं को बाडे में बांधें।

पशुओं को दाने के साथ मिनरल मिक्चर आवश्यक रूप से दें।